New
10-4-2012

विशद
विषापहार स्तोत्र
महामण्डल विधान

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय सर्व सिद्धिकराय सर्वसौख्यं कुरु-कुरु नमः।

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - विशद विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम -2012 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज, ब्र. सुखनन्दनजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

प्राप्ति स्थल - 1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर (राज.)
फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार
ए-107, बुध विहार, अलवर (राज.) मो.: 941401656

3. विशद साहित्य केन्द्र
C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला, जैनपुरी,
रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301

मूल्य : 51/-रु.

-: अर्थ सौजन्य :-

* जैन कैटर्स, कोठी नं. 212, गाँधी नगर, रेवाड़ी (हरियाणा)
* श्री कपूरचंद विमल प्रसाद जैन सर्राफ, रेवाड़ी (हरियाणा)
* श्री कमलचंद राजीवकुमार जैन, सर्राफा बाजार, रेवाड़ी (हरियाणा)
* राजीव-9896011013, मनोज-9416213823
मोनू ज्वैलर्स, पंजाबी मार्केट, रेवाड़ी (हरियाणा)
फोन नं. जिनेन्द्र-9541424564, संजीव-9416214753

New
10-4-2012

महाकवि धनंजय परिचय

(प.पू. श्री 108 आचार्यरत्न बाहुबलीसागरजी महाराज)

'विषापहार' संस्कृत स्तोत्र के रचयिता श्री धनंजय महाकवि, वासुदेव और श्रीदेवी के पुत्र थे। उनके गुरु का नाम दशरथ था। ये दशरूपक के लेखक से भिन्न हैं। ये गृहस्थ कवि थे। इनकी कविता में वैशिष्ट्य है। द्विसन्धान काव्य को राघव पाण्डवीय काव्य भी कहा जाता है क्योंकि इसमें रामायण और महाभारत की दो कथाओं का कथन निहित है।

भोज (11वीं शती ईसवी के मध्य) के अनुसार द्विसन्धान उभयलंकार के कारण होता है। यह तीन प्रकार का है–वाक्य, प्रकरण तथा प्रबन्ध। प्रथम वाक्यगत श्लेष है, द्वितीय अनेकार्थ स्थिति है, तीसरा राघव, पाण्डवीय की तरह पूरा काव्य दो कथाओं का कहने वाला है।

धनजंय कवि का द्विसन्धान संस्कृत साहित्य में उपलब्ध द्विसन्धान काव्यों में प्राचीन और महत्त्वपूर्ण काव्य है। इसके प्रत्येक पद्य दो अर्थों को प्रस्तुत करते हैं। पहला अर्थ रामायण से सम्बद्ध है और दूसरा अर्थ महाभारत है। इसी कारण इसे राघव, पाण्डवीय भी कहा जाता है। ग्रन्थ में 18 सर्ग और आठ सौ श्लोक हैं। यह इन्द्रवज्रा, उपजाति, द्रुतविलम्बित, पुष्पिताग्रा, मालिनी, मन्दाक्रान्ता, रथोद्धता, वसन्ततिलका और शिखरिणी आदि विविध छन्दों में रचा गया है। ग्रन्थगत कथानक संक्षिप्त और सुरूचिपूर्ण है। इस ग्रन्थ पर दो टीकाएँ उपलब्ध हैं जिनमें एक का नाम 'पदकौमुदी' है जिसके कर्त्ता नेमिचन्द्र है, जो पद्मनन्दि के प्रशिष्य और विनयचन्द्र के शिष्य थे। दूसरी टीका राघव, पाण्डवीय प्रकाशिका है, जिसके कर्त्ता परवादि घरट्ट रामभट्ट के पुत्र कवि देवर हैं। दोनों टीकाएँ आरा जैन सिद्धान्त भवन में मौजूद हैं।

काव्य मीमांसा के कर्त्ता राजशेखर ने धनञ्जय कवि की खूब प्रशंसा की। राजशेखर प्रतिहार राजा महेन्द्रपाल के उपाध्याय थे।

वादिराज ने 1025 ई. में लिखे गये अपने पार्श्वनाथ चरित्र में धनंजय तथा एक से अधिक सन्धान में उनकी प्रवीणता का उल्लेख किया है–

अनेक भेदसंधाना खनन्तो हृदये मुहुः।
बाणा धनंजयोन्मुक्ताः कर्णस्येव प्रियाः कथम्।।

कवि की दूसरी कृति 'धनंजय' नाम माला नाम का छोटा–सा दो सौ पद्यों का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण शब्द कोष है। इसके साथ में 46 पद्यों की एक अनेकार्थ नाममाला भी जुड़ी हुई है। कोष में 1700 शब्दों के अर्थ दिये गये हैं। इस छोटे से कोष में संस्कृत भाषा की आवश्यक पदावली का चयन किया गया है। कोष की सबसे बड़ी विशेषता शब्द से शब्दान्तर बनाने की प्रक्रिया है जो अन्यत्र देखने में नहीं आई। जैसे पृथ्वी के आगे 'धर' शब्द जोड़ देने से पर्वत के नाम हो जाते हैं और राजा के नामों के आगे 'रूह' शब्द जोड़ने से वृक्ष के नाम हो जाते हैं। इस पर अमरकीर्ति त्रैविद्य का नाममाला भाष्य है, जो भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हो चुका है।

इनकी तीसरी कृति 'विषापहार स्तोत्र' है जो 39 इन्द्रवज्रा वृत्तों का स्तुति ग्रन्थ है। इसमें आदि ब्रह्मा ऋषभदेव का स्तवन किया गया है। यह स्तवन अपनी प्रौढ़ता, गम्भीरता और अनूठी उक्तियों के लिये प्रसिद्ध है। इस पर अनेक संस्कृत टीकाएँ मिलती हैं, जिनमें सोलहवीं शताब्दी के विद्वान् पार्श्वनाथ के पुत्र नागचन्द्र की है, दूसरी टीका चन्द्रकीर्ति की है।

अगाधताब्धेः स यतः पयोधिर्मेरोश्च तुङ्गाः प्रकृतिः स यत्र।
द्यावा पृथिव्योंः पृथुता तथैव, व्यापत्वदीया भुवनान्तराणि।।

इस पद्य में कवि ने ऋषभदेव की गम्भीरता समुद्र के समान, उन्नत प्रकृति मेरु के समान और विशालता आकाश–पृथ्वी के समान बतलाकर उनकी लोकोत्तर महिमा का चित्रण किया है।

नाममाला के अन्त में एक पद्य मिलता है जिसमें अकलंक देव का प्रमाण शास्त्र, पूज्यपाद या देवनन्दि का लक्षण शास्त्र (व्याकरण) और धनंजय कवि का काव्य द्विसन्धान, ये तीन अपश्चिम रत्न हैं। यह श्लोक धनंजय द्वारा रचा नहीं जान पड़ता।

उससे इसकी महत्ता का भान होता है। चूँकि राजशेखर प्रतीहार राजा महेन्द्रपाल देव के उपाध्याय थे। महेन्द्रपाल का समय वि.सं. 960 के लगभग है। अतः धनंजय 960 से पूर्ववर्ती हैं। वीरसेनाचार्य ने अपनी धवला टीका शक सं.

738 में समाप्त की है। उसकी जिल्द, 6 पृ. 14 में इति शब्द की व्याख्या में धनंजय की अनेकार्थ नाममाला का 39वाँ पद्य उद्धृत किया है–

हेता वेवम्प्रकारादौ व्यवच्छेदे विपर्यये।
प्रादुर्भावे समाप्ते च इति शब्दं विदुंबुधाः।।

इससे धनंजय कवि का समय 800 ईसवी निर्धारित किया जा सकता है।

इस 'विषापहार स्तोत्र' में भगवान ऋषभदेव की स्तुति है। यह स्तुति गंभीर प्रौढ़ और अनूठी उक्तियों से भरपूर है। यह ग्रन्थ कवि की चतुराई से भरा हुआ है। हृदय समुद्र को मथकर निकाला हुआ अमृत है। इसमें शब्दों का माधुर्य एवं अर्थों का गांभीर्य देखने को मिलता है। इस काव्य में स्थान–स्थान पर अलंकारों की छटा छिटकी हुई है।

एक बार कविराज धनंजय पूजन में लीन थे। उनके सुपुत्र को सर्प ने डस लिया। घर से कई बार समाचार आने पर भी वह निस्पृह भाव से पूजन में पूर्णतया तन्मय रहे और पुत्र की कोई सुध नहीं ली। बच्चे को विष चढ़ रहा था, उनकी पत्नी ने कुपित होकर बच्चे को मन्दिर में उनके सामने लाकर रख दिया। पूजन से निवृत्त होकर उन्होंने तत्काल भगवान के सन्मुख ही विषापहार स्तोत्र की रचना की, इधर स्तोत्र की रचना हो रही थी, उधर पुत्र का विष उतर रहा था। श्रद्धा और मनोयोग पूर्वक इसके पाठ से सुख–शान्ति मिलती है और सारे मनोरथ पूर्ण होते हैं।

कवि धनंजय द्वारा रचित **'विषापहार स्तोत्र'** पर प.पू. आचार्यश्री विशदसागरजी महाराज ने वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए बहुत ही सरल भाषा में 'विशद विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान' की रचना की है जो कि संकट में फंसे लोगों के लिए संजीवनी बूटी का काम करती है अर्थात् सच्ची श्रद्धा भक्ति से इस विधान को करने से सर्वकार्य सिद्ध होते हैं। ऋद्धि एवं मंत्र प.पू. आचार्य श्री बाहुबलीसागरजी महाराज द्वारा संकलित पुस्तक से लिये गये हैं।

व्रत विधि–विषापहार के व्रत शुक्ल पक्ष की किसी भी अष्टमी या चतुर्दशी से शुरू करके चालीस उपवास अथवा एकाशन करते हुए उस दिन स्तोत्र पाठ और जाप करते हुए पूर्ण करें।

संकलन–मुनि विशालसागर

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालयेभ्यो: जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालयेभ्यो: संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालयेभ्यो: अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभू ! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालयेभ्यो: कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मैटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालयेभ्यो: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालयेभ्यो: महा-मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सताये हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलाये हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालयेभ्यो: अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

***जाप्य*-ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य, चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा– मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धी पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय हैं ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम्कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा, तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिनबिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ती वास, अजर अमर पद को लहें।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

विषापहार व्रत विधि

विषापहार स्तोत्र श्री ऋषभदेव स्तोत्र है। यह श्री धनंजय कवि की रचना है। इस स्तोत्र के रचते ही उनके पुत्र का सर्पविष उतर गया था। इसलिए विषापहार यह इसका सार्थक नाम है। इसमें 40 व्रत किए जाते हैं। भक्तामर के समान इन व्रतों को करना चाहिए।

समुच्चय मंत्र– ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकराय श्री ऋषभदेवाय नमः।

प्रत्येक व्रत के पृथक्–पृथक् मंत्र–

1. ॐ ह्रीं अर्हं स्वात्मस्थिताय केवलज्ञानकिरणैर्लोकालोकव्याप्ताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

2. ॐ ह्रीं अर्हं युगारंभे युगादिब्रह्मणे वृषभनामप्राप्ताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

3. ॐ ह्रीं अर्हं भक्तिकस्योपरि कृपादृष्टिधारकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

4. ॐ ह्रीं अर्हं परमस्तुत्यगुणसमन्विताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

5. ॐ ह्रीं अर्हं हिताहितविवेकशून्यप्राणिनां बालवैद्याय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

6. ॐ ह्रीं अर्हं विनतजनाभिमतफलप्रदायकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

7. ॐ ह्रीं अर्हं रागद्वेषादिविरहितैकरूपादर्शवद् वीतरागाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

8. ॐ ह्रीं अर्हं गंभीरोत्तुंगविशालगुणविभूषिताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

9. ॐ ह्रीं अर्हं पुनरागमनविरहिताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

10. ॐ ह्रीं अर्हं कामदेवभस्मसात्करणाय सर्वकालजाग्रते सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

11. ॐ ह्रीं अर्हं समुद्रवत्स्वाभाविमहिमोपेताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

12. ॐ ह्रीं अर्हं संसारसागरतरणोपायप्रदर्शकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

13. ॐ ह्रीं अर्हं मूढ़जनहितोपदेशिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

14. ॐ ह्रीं अर्हं विषापहारमण्यौषध–मंत्र–रसायनस्वरूपपर्यायवाचिनामधारकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

15. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजगद्हस्तकृतसामर्थ्यप्रापकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

16. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल–त्रैलोक्यज्ञानस्वामिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

17. ॐ ह्रीं अर्हं इन्द्रकृतप्रभुभक्तिस्वोपकारिगुणसमन्विताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

18. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजगत्प्रियत्वगुणसमन्विताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

19. ॐ ह्रीं अर्हं स्वभक्तजनसर्ववांछितफलदानसमर्थाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

20. ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकरप्रकृतिनिमित्तप्राप्तविभवाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

21. ॐ ह्रीं अर्हं मोहान्धकारत्रस्तजनहितोपदेशप्रकाशप्रदायिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

22. ॐ ह्रीं अर्हं मूढ़जनप्रतिबोधकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

23. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयमनन्तगुणादिस्वरूपमाहात्म्यप्राप्ताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

24. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयमनन्तगुणादिस्वरूपमाहात्म्यप्राप्ताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

25. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनविजयिमोहराजप्रभावमूलोन्मूलिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

26. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंविपक्षगणरहिताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

27. ॐ ह्रीं अर्हं ईप्सितफलप्रापकसमर्थाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

28. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यमार्गप्रतिबोधकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

29. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वहितकरस्याद्वादवचनोपदेशिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

30. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजनहितकरदिव्यध्वनिप्रकटितकरणाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

31. ॐ ह्रीं अर्हं अनंतगुणस्वामिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

32. ॐ ह्रीं अर्हं अभिमतफलप्राप्त्यर्थं प्रयत्नतत्परभाक्तिकजनमनोरथपूर्णीकराय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

33. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपापविरहितपरपुण्यहेतवे सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

34. ॐ ह्रीं अर्हं शब्द-गंध-स्पर्श-रूप-रसविरहिताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

35. ॐ ह्रीं अर्हं अदृष्टपारविश्वपारंगताय जिनपतये सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

36. ॐ ह्रीं अर्हं त्रैलोक्यदीक्षागुरवे सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

37. ॐ ह्रीं अर्हं कालकलामतीताय विभवे सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

38. ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतिकर्त्रे याचनाविरहितायापि सर्वाभीप्सितफलप्रदायिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

39. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मपोष्यशिष्याचार्याय परमकृपालवे सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

40. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसौख्यं यशो धनं जयं दातुं समर्थाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय नमः।

गुरुवर की आरती

(तर्ज–भक्ति का प्रसार है..)

गुरुवर का दरबार है, जग में मंगलकार है।
जैनधर्म की आज यहाँ पर, होती जय जयकार है।।
घृत का दीप जलाया, आज यहाँ पर लाए जी।
भक्ति भावना से भरकर, आरति करने आए जी।।1।।
दूर–दूर से लोग यहाँ पर, गुरु भक्ति को आते हैं।
भक्ति भाव से गुरु चरणों में, नत मस्तक हो जाते हैं।।2।।
वीतराग गुरुवर की मुद्रा, मोक्ष मार्ग दर्शाए जी।
भव्य जीव गुरु दर्शन करके, मन ही मन हर्षाए जी।।3।।
गुरु के चरणों का गंधोदक, जिनको भी मिल जाता है।
जीवन में सौभाग्य उदय शुभ, उनके भी खिल जाता है।।4।।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाली, श्री गुरुवर की वाणी है।
'विशद' ज्ञान प्रगटाने वाली, जग जन की कल्याणी है।।5।।

New
10-4-2012

विषापहार स्तोत्र स्तवन

चौपाई

पावन यह स्तोत्र कहा, सुख शांति का मूल रहा।
रोग शोक भय नाशक है, अनुपम ज्ञान प्रकाशक है।।
विषापहार स्तोत्र महान, मंगलमय शुभ गुण की खान।
जिन प्रभु का जिसमें गुणगान, भक्ति का है स्रोत प्रधान।।1।।
महिमा जिसकी अपरम्पार, पढ़कर मिले धर्म का सार।
भक्ती का है शुभ आधार, जीवों का होता उपकार।।
पुण्यवान हों ज्ञानी जीव, पावें प्राणी सौख्य अतीव।
भोग छोड़कर धारें योग, पावें संयम का संयोग।।2।।
रत्नत्रय युत पाते धर्म, जिससे कटते सारे कर्म।
आश्रव का हो जाय निरोध, निज में जागे आतम बोध।।
कर्म निर्जरा करे महान्, हो जाते कई ऋद्धीवान।
कर्म घातिया करते नाश, पाते केवल ज्ञान प्रकाश।।3।।
ज्ञाता दृष्टा बने महान्, सर्व चराचर का हो भान।
वीतरागता की वह शान, सर्वलोक में रही प्रधान।।
जिनके पद झुकता संसार, वन्दन करता बारम्बार।
चक्रवर्ति आदि शत इन्द्र, झुकते चरणों सभी सुरेन्द्र।।4।।
अनुक्रम से बनते फिर सिद्ध, लोकोत्तम हैं जगत प्रसिद्ध।
अविनाशी अनुपम अविकार, अक्षय कहे अखण्ड अपार।।
प्रभु को वन्दन करूँ त्रिकाल, हाथ जोड़ करके नत भाल।
तव पदवी हमको हे नाथ, मिल जाए हे दीनानाथ।।5।।

दोहा– विशद लोक में पूज्य तव, 'विशद' आपका धाम।
तव पद पाने हेतु हम, करते विशद प्रणाम।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री विषापहार पूजन

स्थापना

हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ ! हे ज्ञान ध्यान तप के धारी !।
हे विषापहार करने वाले !, हे भव्यों के करुणाकारी !।।
जो भाव सहित तुमको ध्याये, उसका विष निर्विष हो जाए।
इस भव के सारे सुख पाकर, वह मुक्ति वधु को भी पाए।।
हम हृदय कमल में करते हैं, प्रभु आदिनाथ का आह्वानन।
स्थापन करते निज उर में, चरणों में करते शत वन्दन।।

ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(जोगीरासा)

प्रासुक करके नीर कूप का, यहाँ चढ़ाने लाए।
ज्ञानावरणी कर्म नाश कर, ज्ञान जगाने आए।।
विषापहार स्तोत्र की पूजा, कर सौभाग्य जगाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चन्दन श्रेष्ठ सुगंधित, पूजा करने लाए।
कर्म दर्शनावरण नाशकर, दर्शन पाने आए।।
विषापहार स्तोत्र की पूजा, कर सौभाग्य जगाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत धवल सुगन्धित, पूजा करने लाए।
कर्म नाशकर वेदनीय हम, अव्याबाध गुण पाएँ।।
विषापहार स्तोत्र की पूजा, कर सौभाग्य जगाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प सुगन्धित अनुपम, भाँति-भाँति के लाए।
गुण सम्यक्त्व प्रकट करने हम, मोह नशाने आए।।
विषापहार स्तोत्र की पूजा, कर सौभाग्य जगाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा को नैवेद्य सरस शुभ, ताजे श्रेष्ठ बनाए।
अवगाहन गुण पाने हेतू, कर्मायु नश जाए।।
विषापहार स्तोत्र की पूजा, कर सौभाग्य जगाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीप जलाकर जगमग, आरति करने लाए।
सूक्ष्मत्व गुण प्राप्त हमें हो, नाम कर्म नश जाए।।
विषापहार स्तोत्र की पूजा, कर सौभाग्य जगाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि में यह धूप दशांगी, यहाँ जलाने आए।
अगुरुलघु गुण प्राप्त हमें हो, गोत्र कर्म नश जाए।।
विषापहार स्तोत्र की पूजा, कर सौभाग्य जगाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनुपम ले सरस सुगन्धित, पूजा करने आए।
गुण वीर्यत्व प्राप्त हो हमको, अन्तराय नश जाए।।
विषापहार स्तोत्र की पूजा, कर सौभाग्य जगाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ पाने हम अतिशय, अर्घ्य बनाकर लाए।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, सिद्ध सुपद मिल जाए।।
विषापहार स्तोत्र की पूजा, कर सौभाग्य जगाएँ।
यह संसार असार छोड़कर, शिवपुर धाम बनाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- क्षीर नीर से हम यहाँ, देते शांती धार।
अष्ट कर्म को नाशकर, पाने भव से पार।। शांतये शांतिधारा..
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, आदिनाथ पद आज।
भव सिन्धु से मुक्त हो, पाने निज स्वराज।। पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- जिन भक्ती से हों सभी, प्राणी मालामाल।
विषापहार स्तोत्र की, गाते हम जयमाल।।

हे आदिनाथ करुणा निधान, तुम करुणा सागर कहलाए।
तुम धर्म प्रवर्तन करने को, अर्हत् बनकर जग में आए।।
जब गर्भ में आये थे स्वामी, नगरी तव देव सजाए थे।
छह माह पूर्व से देवों ने, कई रत्न श्रेष्ठ बरसाए थे।।1।।
जब जन्म हुआ था जिनवर का, सुरपति ऐरावत लाया था।
मेरू के ऊपर सुरपति ने, प्रभुवर का न्हवन कराया था।।
सौधर्म इन्द्र को भक्ति का, मानो अनुपम उपहार मिला।
जिनदेव की भक्ति करने से, श्रद्धा का अनुपम पुष्प खिला।।2।।
षट्कर्मों का तुमने भू पर, लोगों को शुभ उपदेश दिया।
तुम ऋषी बनो या कृषि करो, लोगों को यह संदेश दिया।।
शुभ वर्ण व्यवस्था किए आप, अतएव मनु भी कहलाए।
प्रभु मरण देखकर देवी का, वैराग्य भावना शुभ भाए।।3।।
संसार असार जान प्रभु ने, फिर संयम को अपनाया था।
दीक्षा लेकर छह महिने का, प्रभु तुमने ध्यान लगाया था।।

छह माह घूमते रहे प्रभु, आहार नहीं हो पाया था।
लोगों को इसी बहाने से, चर्या का ज्ञान कराया था।।4।।
कर कठिन साधना सहस वर्ष, प्रभु केवलज्ञान जगाया था।
देवों ने आकर उसी समय, शुभ समवशरण बनवाया था।।
शत् इन्द्रों ने आकर चरणों, जिनवर का जय-जय गान किया।
भक्ती में होकर सराबोर, प्रभुवर का शुभ गुणगान किया।।5।।
प्रभु ने अष्टापद जाकर के, निज से निज का शुभ ध्यान किया।
कर योग निरोध चौदह दिन का, फिर उसी जगह निर्वाण किया।।
जो शरण प्रभु की आकर के, भक्ती में भाव लगाते हैं।
सौभाग्य जगाते हैं अपना, वह इच्छित फल को पाते हैं।।6।।
एक सेठ धनञ्जय ने प्रभु की, भक्ती में ध्यान लगाया था।
प्रभु का गंधोदक पाने से, भक्ती का फल शुभ पाया था।।
हम भक्ती के शुभ पुष्प लिए, प्रभु चरण आपके आए हैं।
श्रद्धा से नत हैं चरणों में, प्रभु अपना शीश झुकाए हैं।।7।।
हम यही कामना करते हैं, प्रभु जीवन यह मंगलमय हो।
हम मुक्ती पद को प्राप्त करें, प्रभु मेरे कर्मों का क्षय हो।।
जिस पद को तुमने पाया है, वह पद अब हमें प्रदान करो।
मुझ भूले भटके राही को, आश्रय देकर कल्याण करो।।8।।

दोहा- हे नाथ आपकी भक्ति का, मिले 'विशद' आधार।
चरण वंदना कर रहे, तव पद बारम्बार।।

ॐ ह्रीं विषापहारक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- विषापहार स्तोत्र का, करने से गुणगान।
भव की बाधा दूर हो, हो जावे कल्याण।।

इत्याशीर्वादः

दोहा- विषापहार स्तोत्र है मुक्ति का सोपान।
पुष्पाञ्जलि करके यहाँ, करते हैं गुणगान।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

विषापहार स्तोत्र विधान प्रारम्भ

सर्व विघ्न विनाशक

स्वात्मस्थितः सर्वगतः समस्त, व्यापार वेदी विनिवृत्तसंगः।
प्रवृद्धकालोऽप्यजरो वरेण्यः,पायादपायात्पुरुषः पुराणः।।1।।

अर्थ-आत्म स्वरूप में स्थिर होकर भी सर्वव्यापक सब व्यापारों के जानकार होकर भी परिग्रह से रहित, दीर्घ आयुवाले होकर भी बुढ़ापे से रहित तथा श्रेष्ठ प्राचीन पुरुष भगवान वृषभनाथ हम सबको विनाश से रक्षित करें।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

आत्मरूप में संस्थित हैं अरु, त्रिभुवन के हैं पथगामी।
वेत्ता हैं सब व्यापारों के, अपरिग्रही हैं जिन स्वामी।।
दीर्घायु से सहित आप हैं, वृद्ध अवस्था से भी हीन।
श्रेष्ठ पुराण नरोत्तम जग में, जो विनाश से पूर्ण विहीन।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

अर्घ्य- ॐ ह्रीं अर्हं स्वात्मस्थिताय केवलज्ञान किरणैर्लोकालोकव्याप्ताय केवलिसमुद्घातसमयसर्वलोकव्यापिने पुराणपुरुषाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि- ॐ ह्रीँ अर्हं णमो जिणाणं।

मंत्र-ॐ ह्रीँ श्रीं क्लीं पुराणपुरुषोत्तम श्री वृषभ-देवाय नमः स्वाहा।

अचिन्त्य महिमावान

परैरचिन्त्यं युगभारमेकः, स्तोतुं वहन्योगिभिरप्यशक्यः।
स्तुत्योऽद्य मेऽसौ वृषभो न भानोः, किमप्रवेशे विशति प्रदीपः।।2।।

अर्थ–दूसरों के द्वारा चिंतवन करने के अयोग्य कर्मयुग के भार को अकेले ही धारण किये हुए तथा मुनियों के द्वारा भी जिनकी मंत्र–स्तुति नहीं की जा सकती है ऐसे वे भगवान् वृषभदेव ! आज मेरे द्वारा स्तुति करने के योग्य हैं अर्थात् आज मैं उनकी स्तुति कर रहा हूँ। सो ठीक है, सूर्य का प्रवेश नहीं होने पर क्या दीपक प्रवेश नहीं करता ? अर्थात् करता है।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

युग का भार विचिन्तित जिसने, अन्य अकेले ही धारा।
एवं जिनका गुण कीर्तन भी, सम्भव न मुनियों द्वारा।।
अभिनंदन के योग्य मेरे वह, श्री वृषभ दुख के हर्त्ता।
रवि अभाव में हे प्रभुवर ! क्या, दीप प्रवेश नहीं करता।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं युगारंभे प्राणिप्राणधारणोपायप्रदर्शिने युगादिब्रह्मणे अचिन्त्यमहिम्ने वृषभनामप्राप्ताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि–ॐ ह्रीँ अर्हं णमो ओहि जिणाणं।

मंत्र–ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः स्वाहा।

इच्छित फलदर्शन

तत्त्याज शक्रः शकनाभिमानं, नाहं त्यजामि स्तवनानुबन्धम्।
स्वल्पेन बोधेन ततोऽधिकार्थं, वातायनेनेव निरूपयामि।।3।।

अर्थ–इन्द्र ने स्तुति कर सकने की शक्ति का अभिमान छोड़ दिया था, किन्तु मैं स्तुति के उद्योग को नहीं छोड़ रहा हूँ। मैं झरोखे की तरह थोड़े से ज्ञान के द्वारा झरोखे और ज्ञान से अधिक अर्थ को निरूपित कर रहा हूँ।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

तव संस्तुति करने का भी, जब त्याग चुका मद है सुरपति।
पर में तव गुण गाने का भी, करे न उद्यम हे जिनपति ! ।।
वातायन सम सीमित होकर, अल्प ज्ञान से मैं इस क्षण।
करता हूँ उनसे विस्तृत अति, व्यापक अर्थ का मैं निरुपण।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं वातायनमिव स्वल्पबोधधारकत्वत्स्तुतिकरणोद्यति–भक्तिकस्योपरि कृपादृष्टिधारकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो परमोहि जिणाणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

विद्यादायक

त्वं विश्वदृश्वा सकलैरदृश्यो, विद्वानशेषं निखिलैरवेद्यः।
वक्तुं क्रियान्कीदृश मित्यशक्यः, स्तुतिस्ततोऽशक्तिकथा तवास्तु।।4।।

अर्थ–आप सबको देखने वाले हैं किन्तु सबके द्वारा आप नहीं देखे जाते, आप सबको जानते हैं पर सबके द्वारा आप नहीं जाने जाते आप कितने और कैसे हैं यह भी नहीं कहा जा सकता, आपकी स्तुति मेरी असमर्थ्य की कहानी है।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

आप सभी के ज्ञाता दृष्टा, किन्तु सबसे आदर्शित।
वेत्ता भी हो आप सभी के, विदित नहीं हो स्पर्शित।।
कितने हैं ? कैसे हैं ? प्रभुजी, बता नहीं पाते ज्ञानी।
प्रभु तव संस्तुति से प्रगटित हो, मेरी शक्ती अन्जानी।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृश्वादृश्यसर्वजगदज्ञेय परमस्तुत्यगुणसमन्विताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ अर्हं नमः क्ष्वीं स्वाहा।

अज्ञानता विनाशक

व्यापीडितं बालमिवात्मदोषै–, रुल्लाघतां लोकमवापिपस्त्वम्।
हिताहितान्वेषणमांद्यभाजः, सर्वस्य जन्तोरसि बालवैद्यः।।5।।

अर्थ–आपने बालक की तरह अपने द्वारा किये गये अपराधों से अत्यन्त पीड़ित संसारी मनुष्यों को निरोगता प्राप्त कराई है। निश्चय से आप हिताहित के विचार करने में असमर्थ के लिए बाल वैद्य हैं।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
जो शिशुओं सम व्याकुल जग में, अपने दोषों के कारण।
उन दोषों का पूर्ण रूप से, किया आपने है वारण।।
मूढ़ बुद्धि हित और अहित का, कर न पाते हैं निर्णय।
बाल वैद्य बनकर निश्चय से, करते भव रोगों का क्षय।।
श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।5।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं स्वदोषपीड़ितहिताहितविकेशून्यप्राणिनां बालवैद्याय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ श्रीं क्लीं क्रौं विकट संकट निवारणेभ्यः वृषभ यक्षेभ्यो नमो नमः स्वाहा।

अभीप्सित फलप्रदाता

दाता न हर्ता दिवसं विवस्वा– नद्यश्व इत्यच्युत ! दर्शिताशः।
सव्याजमेवं गमयत्यशक्तः, क्षणेन दत्सेऽभिमतं नताय।।6।।

अर्थ–उदारता आदि गुणों से सहित हे जिनेन्द्र देव ! सूर्य न देता है न अपहरण करता है सिर्फ आजकल इस तरह आशा दिखाता हुआ दिन को बिता देता है, किन्तु आप नम्र मनुष्य के लिए क्षणभर में इच्छित वस्तु दे देते हैं।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
कुछ भी हरण नहीं करता है, न ही कुछ देता दिनकर।
आज और कल की आशाएँ, सब जीवों को दिखलाकर।।
हो असमर्थ दिवस खो देता, प्रतिदिन ही जगती को छल।
शीघ्र आप जन जन को बन्धु, दे देते मन वांछित फल।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं विनतजनाभिमतफलप्रदायकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं

मंत्र–ॐ ह्रीँ श्रीं वृषभदेवाय ह्रीं नमः स्वाहा।

संतान सुखदायक

उपैति भक्त्या सुमुखः सुखानि, त्वयि स्वभावाद् विमुखश्च दुःखम्।
सदावदात–द्युतिरेकरूप–, स्तयोस्त्वमादर्श इवावभासि।।7।।

अर्थ–स्तुति निंदा से स्वमेव सुख–दुःख प्राप्ति आपके अनुकूल चलने वाला पुरुष भक्ति से सुखों को प्राप्त होता है और प्रतिकूल चलने वाला स्वभाव से ही दुःख पाता है किन्तु आप उन दोनों के आगे दर्पण की तरह हमेशा उज्ज्वल कांतियुक्त तथा एक सदृश शोभायमान रहते हैं।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
जो अनुकूल आपके चलते, वह प्राणी सुख से रहते।
रहते जो प्रतिकूल आपके, जग के अगणित दुख सहते।।
आप सदा दोनों के आगे, दर्पण सम रहते भगवान।
अपनी आभा में निमग्न हो, होते नहीं कभी भी क्लान।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं भक्तिकाभक्तिकजनराग–द्वेषादिरहितैकरूपादर्शवद् वीतरागाय पुराणपुरुषाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो बीज बुद्धीणं।

मंत्र–ॐ आं क्रों ह्रीँ क्लीं ब्लूं द्रां द्रीं ज्वालामालिनी स्वाहा।

सर्व व्यापीगुण धारक

अगाधताब्धेः स यतः पयोधि–, र्मेरोश्च तुंगा प्रकृतिः स यत्र।
द्यावापृथिव्योः पृथुता तथैव, व्याप त्वदीया भुवनान्तराणि।।8।।

अर्थ–समुद्र की गहराई वहाँ है जहाँ समुद्र है, सुमेरु पर्वत की ऊँचाई वहाँ है जहाँ सुमेरु पर्वत है और आकाश पृथ्वी की विशालता भी उसी प्रकार है अर्थात् जहाँ आकाश और पृथ्वी हैं वहीं उनकी विशालता है परन्तु आपकी गहराई, उन्नत प्रकृति और हृदय की विशालता ने तीनों लोकों के मध्य भाग को व्याप्त कर लिया है।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
सागर का गहरापन भाई, सागर तक मर्यादित है।
अरु सुमेरु की ऊँचाई भी, मात्र उसी तक सीमित है।।
वसुधा और गगन की सीमा, तीन लोक में रही महान्।
तव गुण से कण–कण पूरित हैं, तीन लोक में हे भगवान।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।8।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं समुद्रसुमेरुगगनपृथिव्यापेक्षयाधिकगंभीरोत्तुंगविशाल–गुणविभूषिताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर–श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो पदाणुसारीणं।

मंत्र–ॐ नमो भगवते क्षं क्षं वं वं हम्ल्व्र्यूं विषधर गतिस्तम्भं कुरु कुरु स्वाहा।

दोहा– जिन भक्ती करके मिले, मुक्ति का सोपान।
'विशद' कर्म का नाश हो, शिवपुर होय प्रयाण।।

ॐ ह्रीं सर्वविषापहारिणे श्री ऋषभ देवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि रोग नाशक

तवानवस्था परमार्थतत्त्वं, त्वया न गीतः पुनरागमश्च।
दृष्टं विहाय त्वमदृष्टमैषी–र्विरुद्धवृत्तोऽपि समञ्जसस्त्वम्।।9।।

अर्थ–परिवर्तनशीलता आपका वास्तविक सिद्धांत है और आपके द्वारा मोक्ष

से वापिस आने का उपदेश दिया नहीं गया है तथा आप प्रत्यक्ष इहलोक सम्बन्धी सुख छोड़कर परलोक सम्बन्धी सुख को चाहते हैं, इस तरह आप विपरीत प्रवृत्ति युक्त होने पर भी उचितता से युक्त हैं।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

है सिद्धांत आपका प्रभुवर, अनवस्थित है और यथार्थ।
पुनरागमन व्यवस्था का न, घोषित किया आपने अर्थ।।
इह लौकिक सुख त्याग सौख्य शुभ, पर लौकिक के अभिलाषी।
शरणागत को मिले आपके, रहे और विरोधाभाषी।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।9।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं अनवस्थास्वरूपपरमार्थतत्त्वोपदेशि–पुनरागमनविरहिताय दृष्टसुखत्यक्तादृष्टसुखोपायदर्शिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्णसोदाराणं।

मंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रः अ सि आ उ सा सर्वशांतिं कुरु–कुरु ॐ नमः स्वाहा।

शत्रु जयकारक

स्मरः सुदग्धो भवतैव तस्मि–, न्नुद्धूलितात्मा यदि नाम शम्भुः।
अशेत वृन्दोपहतोऽपि विष्णुः, किं गृह्यते येन भवानजागः।।10।।

अर्थ–काम करके आपके द्वारा ही अच्छी तरह भस्म किया गया है। यदि आप कहें कि महादेव ने भी तो भस्म किया था तो वह कहना ठीक नहीं क्योंकि बाद में वह उस काम के विषय में कलंकित हो गया था और विष्णु ने भी वृन्दा–लक्ष्मी नामक स्त्री से प्रेरित हो शयन किया था, यह बात क्यों ग्रहण की गई जिस कारण से आप जागृत रहे। अर्थात् काम निद्रा में अचेत नहीं हुए।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

हुआ वस्तुतः आपके द्वारा, मर्यादित शुभ कार्य अशेष।
हुआ मनोज कलंकित शम्भू, कैसे माने गये विशेष।।
लक्ष्मी से प्रेरित होकर के, विष्णु भी सोये स्वमेय।
जागृत थे अविराम आप क्यों, ग्राह्य हुए फिर कैसे एव।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।10।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं जगद्विजयिकामदेवभस्मसात्करणाय सर्वकालजाग्रते सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं।

मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं महालक्ष्मयै नमः स्वाहा।

श्री सुख प्रदायक

स नीरजाः स्यादपरोऽघवान्वा, तद्दोषकीर्त्यैव न ते गुणित्वम्।
स्वतोऽम्बुराशेर्महिमा न देव ! स्तोकापवादेन जलाशयस्य।।11।।

अर्थ–वह ब्रह्मादि देवों का समूह पाप रहित हो और दूसरा देव पाप सहित हो, उनके दोषों का वर्णन करने मात्र से ही आपकी गुण सहितता नहीं है। हे देव ! समुद्र की महिमा स्वभाव से ही होती है, यह गहरा है, यह छोटा है, इस तरह तालाब वगैरह की निन्दा से नहीं होती।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

ब्रह्मादि या अन्य देव कोइ, सारे जग के सविकारी।
उनके दोष कथन से गरिमा, रह पाती न अविकारी।।
जिस कारण सागर की महिमा, हो स्वभावतः हे जिनवर !
सिद्ध नहीं हो पाए कभी भी, सरवर को छोटा कहकर।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।11।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं सरागदेवदोषकथनानपेक्षिसमुद्रवत् स्वाभावि–महिमोपेताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो पत्तेयबुद्धाणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ वद् वद् वाग्वादिनी भगवती सरस्वती देव्ये ह्रीँ नमः स्वाहा।

सर्व विजयदायक

कर्मस्थितिं जन्तुरनेकभूमिम्, नयत्यमुं सा च परस्परस्य।
त्वं नेतृभावं हि तयोर्भवाब्धौ, जिनेन्द्र नौनाविकयोरिवाख्यः।।12।।

अर्थ–जीव कर्मों की स्थिति को अनेक जगह ले जाता है और वह कर्मों की स्थिति उस जीव को अनेक जगह ले जाती है। इस तरह हे जिनेन्द्र देव ! आपने संसार रूप समुद्र नाव और खेवटिया की तरह उन दोनों में निश्चय से एक दूसरे का नेतृत्व कहा है।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

कर्म पिण्ड को भव–भव में यह, जीव साथ ले जाता है।
वही कर्म का पिण्ड जीव को, हर गति साथ घुमाता है।।
हे जिनेन्द्र ! नौका नाविक सम, भव जल में यह दिखलाया।
सत्य नियम नेतृत्व परस्पर, कहकर जग को बतलाया।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।12।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं जीवकर्मान्योन्यनेतृभावप्रतिपादकाय संसारसागरतरणोपायप्रदर्शकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो बोहि बुद्धाणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ श्रीं क्लीं गं गं ओ गं गं नमो संकट कष्ट विकट दुःख निवारणाय स्वाहा।

रोग विनाशक

सुखाय दुःखानि गुणाय दोषान्, धर्माय पापानि समाचरन्ति।
तैलाय बालाः सिकतासमूहं, निपीडयन्ति स्फुटमत्वदीयाः।।13।।

अर्थ–जिस प्रकार बालक तेल के लिए बालू के समूह को पेलते हैं ठीक उसी प्रकार आपके प्रतिकूल चलने वाले पुरुष सुख के लिए दुःखों को गुण के लिए दोषों को और धर्म के लिए पापों को समाचरित करते हैं।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

जैसे तेल प्राप्त करने को, शिशु पेला करते रज कण।
विमुख आपके शासन से त्यों, देव अनेकों है नर गण।।
सुख की इच्छा से दुख पाते, गुण की इच्छा करके दोष।
धर्म हेतु पापों का संचय, करके भरते उनका कोष।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।13।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं सुखेच्छुकदुःखकारणोत्पादकमूढ़जनहितोपदेशिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो उजुमदीणं।

मंत्र–ओं झं झं यं यं क्रं उं वं बं लं क्षं एं ऐं ओ ओं ह्रं नमः स्वाहा।

विषापहारी जिनवर

विषापहारं मणिमौषधानि, मन्त्रं समुद्दिश्य रसायनं च।
भ्राम्यन्त्यहो न त्वमिति स्मरन्ति, पर्यायनामानि तवैव तानि।।14।।

अर्थ–मणि, मंत्र और औषधि आदिक सुख देने वाले और रोगादिकों को हरण करने वाले लगते हैं परन्तु वे सचमुच रागादिक का नाश नहीं कर सकते हैं। जन्म–जरा और मरण रूप रोग के नाश करने के लिए आप ही परम समर्थ हैं इसलिए वे मंत्रादिक आपके ही पर्यायवाची नाम समझने चाहिए।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

मणी मंत्र औषधी रसायन, खोज रहें हैं विषहारी ।
भोले प्राणी भटक रहे हैं, खोज रहे विस्मयकारी।।
मणी मंत्र औषधि आप कुछ, नहीं ध्यान में भी लाते ।
क्योंकि आपके ही यह सारे, पर्यय नाम कहे जाते।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।14।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं विषापहारमरण्यौषध–मंत्र–रसायनस्वरूपपर्याय–वाचिनामधारकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो विउलमदीणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ श्रीं अर्हं णमिऊण विसहर विसजिण फुलिंग ह्रीँ श्रीं क्लीं नमः।

सर्व अर्थ सिद्धिदायक

चित्ते न किञ्चित्कृतवानसि त्वं, देवः कृतश्चेतसि येन सर्वम्।
हस्ते कृतं तेन जगद्विचित्रं, सुखेन जीवत्यपि चित्तबाह्यः।।15।।

अर्थ–आप अपने हृदय में कुछ भी नहीं करते हैं, नहीं रखते हैं किन्तु जिसके द्वारा आप हृदय में धारण किये गये हैं, उसके द्वारा समस्त संसार का उसने सब कुछ पा लिया है। यह आश्चर्य की बात है और आप चेतन से रहित होते हुए भी सुख से जीवित है, यह आश्चर्य है।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

स्वयं आप अपने मन में हे, देव ! नहीं कुछ भी करते।
प्राणी भाव सहित इस जग के, मोद सहित उर में धरते।।
मानो सर्व जगत् को उनने, किया हाथ में भी संचित।
है आश्चर्य ! आप चेतन से, रहित लोक में हो जीवित।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।15।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं स्वहृदयकमलधृत्सर्वजगद्हस्तकृतसामर्थ्यप्रापकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो दसपुव्वीणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ हं सः स्वाहा।

परम शांति प्रदायक

त्रिकालतत्त्वं त्वमवैस्त्रिलोकी, स्वामीति संख्यानियतेरमीषाम्।
बोधाधिपत्यं प्रति नाभविष्यं–, स्तेऽन्येऽपिचेद्व्याप्स्यदमूनपीदम्।।16।।

अर्थ–आप भूत–भविष्यत्–वर्तमान इन तीनों कालों के पदार्थों को जानते हैं तथा ऊर्ध्व, मध्य, पाताल तीनों लोकों के स्वामी हैं, इस प्रकार की संख्या उन पदार्थों के निश्चित संख्यावाले होने से ठीक हो सकती है परन्तु ज्ञान के साम्राज्य के पूर्वोक्त प्रकार की संख्या ठीक नहीं हो सकती क्योंकि ज्ञान में और भी पदार्थ होते तो उन्हें भी व्याप्त कर लेता।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

त्रैकालिक तत्वों के ज्ञाता, अरु त्रिलोक के हो स्वामी।
उनकी निश्चितता से संख्या, बन जाती प्रभु अनुगामी।।

नहीं ज्ञान के शासन में पर, यह संख्या समुचित मानी ।
होती कोई और यदि वह, जान रहे केवलज्ञानी ।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की ।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ।।16 ।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल–त्रैलोक्यज्ञानस्वामिने असंख्यातलोकप्रमाण–केवलज्ञान समन्विताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो–चउदस पुव्वीणं ।

मंत्र–ॐ ह्रीँ श्रीं क्लीं परम शान्ति विधायकाय श्री वृषभजिनपादाय नमः स्वाहा ।

सम्मान सौभाग्यवर्द्धक

नाकस्य पत्युः परिकर्म रम्यं, नागम्यरूपस्य तवोपकारि ।
तस्यैव हेतुः स्वसुखस्य भानो–रुद्बिभ्रतच्छत्रमिवादरेण ।।17 ।।

अर्थ–इन्द्र की मनोहर सेवा अज्ञेय है, आपका स्वरूप उपकार करने वाला नहीं है, किन्तु जिसका स्वरूप अप्राप्य है, ऐसे सूर्य के लिए आदरपूर्वक छत्र धारण करने वाले की तरह उस इन्द्र के ही आत्म सुख का कारण है ।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं ।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें ।।

शिवपुर के स्वामी की सेना, सर्व जगत् में मनहारी ।
हे आगम ! के धारी अनुपम, नहीं आपकी उपकारी ।।
जैनागम के दिनकर को शुभ, छत्र लगाने वाली है ।
आत्मिक सुख देने वाली जो, जग में विशद निराली है ।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की ।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ।।17 ।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं आतपहरछत्रमिव इन्द्रकृत्तप्रभुभक्तिस्वोपकारिगुण–समन्विताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो अट्ठांग महाणिमित्त कुसलाणं ।

मंत्र–ॐ ह्रीँ श्रीं ऐं साधय–साधय ब्लूं अर्हं नमः स्वाहा ।

अकथनीय महिमाधारक

क्वोपेक्षकस्त्वं क्व सुखोपदेशः स चेत्किमिच्छा प्रतिकूलवादः ।
क्वासौ क्व वा सर्वजगत्प्रियत्वम्–, तन्नो यथातथ्य मवेविजं ते ।।18 ।।

अर्थ–रागद्वेष रहित आप कहाँ और सुख का उपदेश देना कहाँ । यदि सुख का उपदेश आप देते हैं तो इच्छा के विरुद्ध बोलना ही कहाँ है अर्थात् आपकी इच्छा नहीं है ऐसा कथन क्यों किया जाता है ? इच्छा के प्रतिकूल बोलना कहाँ ? और सब जीवों को प्रिय होना कहाँ ? अतः जिस कारण से आपकी प्रत्येक बात में विरोध है उस कारण से मैं आपकी वास्तविकता–असली रूप का विवेचन नहीं कर सकता ।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं ।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें ।।

कहाँ आप निर्मोही जिनवर, कहाँ सुखद उपदेश महान् ।
इच्छा के विपरीत निरूपण, कहाँ आपका हो भगवान ।।
कहाँ लोक प्रियता होती है, कहाँ लोक रंजकता एव ।
यों विरोध है सब प्रकार से, होय नहीं सद्रूप सदैव ।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की ।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं ।।18 ।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं सर्वजगदुपेक्षकायापि सर्वोपदेशकसर्वजगत्प्रियत्वगुण–समन्विताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं।

मंत्र–ॐ क्लीं क्लौं अ सि आ उ सा वरे सुवरे नमः स्वाहा।

सर्व विजयदायक

तुंगात्फलं यत्तदकिञ्चनाच्च, प्राप्यं समृद्धान्न धनेश्वरादेः।
निरम्भसोऽप्युच्चतमादिवाद्रे–र्नैकापि निर्याति धुनी पयोधेः ।।19।।

अर्थ–उदार चित्तवाले दरिद्र मनुष्य से भी जो फल प्राप्त हो सकता है वह सम्पत्तिशाली धनाढ्यों से नहीं प्राप्त हो सकता। ठीक ही तो है पानी से शून्य होने पर भी अत्यन्त ऊँचे पहाड़ के समान समुद्र से एक भी नदी नहीं निकलती है भगवान ! आपके पास कुछ भी नहीं है परन्तु आपका हृदय पर्वत की तरह उन्नत है आपसे हमें जो चीज मिलती है वो हमें कहीं से नहीं मिल सकती।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
दानी निष्किन्चन से जो फल, पल में ही मिल जाता है।
धनशाली लोभी जन से वह, नहीं प्राप्त हो पाता है।।
अद्रि शिखर से जल विहीन ज्यों, अगणित सरिताएँ बहतीं।
पर हे नाथ ! सभी सरिताएँ, सागर से दूर सदा रहतीं।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।19।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं निर्जलोच्चतमाद्रिनिर्गतनदीसम–अकिंचनायस्वभक्तजन–सर्ववांछितफलदानसमर्थाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं।

मंत्र–ॐ ह्रीं क्ष्वीं क्ष्वीं सुवदेव आगत अर्हत् उत्पत उत्पत स्वाहा।

मनोरथ पूरक

त्रैलोक्य–सेवा नियमाय दण्डं, दधे यदिन्द्रो विनयेन तस्य।
तत्प्रातिहार्य भवतः कुतस्त्यं, तत्कर्म योगाद्यदि वा तवास्तु।।20।।

अर्थ–इन्द्र ने विनयपूर्वक नियम लिया कि मैं तीन लोक के जीवों की सेवा करूँगा, उन्हें धर्म के मार्ग पर लगाऊँगा। इस उद्देश्य से धारण किया था। उस कारण से प्रतीहारपना इन्द्र के ही हो आपके कहाँ से आया ? उस कार्य के प्रेरक होने से आपके भी प्रतिहारपना हो।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
तीनों लोकों की सेवा के, अर्थ नियम के जो कारण।
अधिक विनय से सुरपति द्वारा, दण्ड किया था जो धारण।।
प्रातिहार्य उसको यों होते, नहीं आपको संभव नाथ।
कर्म योग से वही आपके, पद में झुका रहे हैं माथ।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।20।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं महिमा त्रैलोक्यसेवानियमरूपदण्डधृतइंद्रकृतप्रातिहार्याय तीर्थंकरप्रकृतिनिमित्तप्राप्तविभवाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं।

मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चक्रधारिणी चक्रेश्वरी देवी दुष्टान् हानय हानय स्वाहा।

वाञ्छापूरक

श्रिया परं पश्यति साधु निःस्वः, श्रीमान्न कश्चित्कृपणं त्वदन्यः।
यथा प्रकाश-स्थितमन्धकार-स्थायीक्षतेऽसौ न तथा तमःस्थम्।।21।।

अर्थ-निर्धन पुरुष लक्ष्मी से श्रेष्ठ अर्थात् सम्पन्न मनुष्य को अच्छी तरह आदर भाव से देखता है किन्तु आप से भिन्न कोई सम्पत्तिशाली पुरुष निर्धन को अच्छे भावों से नहीं देखता है। ठीक है अन्धकार में ठहरा हुआ मनुष्य उजेले में ठहरे हुए पुरुष को जिस प्रकार देख लेता है उसी प्रकार उजेले में स्थित पुरुष अंधेरे में स्थित पुरुष को नहीं देख पाता।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

निर्धन जन लक्ष्मी शाली को, सदा देखते हैं सादर।
शिवा आपके निर्धन को वह, धनी नहीं देते आदर।।
तिमिरावस्थित प्राणी को ही, ज्यों प्रकाश दिखलाता है।
त्यों प्रकाश स्थित प्राणी को, नहीं देखने पाता है।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।21।।

अर्घ्य- ॐ ह्रीं अर्हं निर्धन-दुःखिजनानां दयादृष्ट्यवलोकिने मोहान्धकार-त्रस्तजनहितोपदेशप्रकाशप्रदायिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि- ॐ ह्रीँ अर्हं णमो पण्णसमणाणं।

मंत्र-ॐ ह्रीँ हर हुं हः सरसुंसः क्लीं क्ष्वीं हुं फट् स्वाहा।

अरिष्ट योगनिवारक

स्ववृद्धिनिःश्वास-निमेषभाजि, प्रत्यक्षमात्मानुभवेऽपि मूढः।
किं चाखिल-ज्ञेय-विवर्ति-बोध-स्वरूपमध्यक्षमवैति लोकः।।22।।

अर्थ-भगवान ! जो मनुष्य अपने आपके स्थूल पदार्थों को जानने के लिए समर्थ नहीं है वह ज्ञानस्वरूप तथा आत्मा में विराजमान आपको कैसे जान सकता है ? अर्थात् नहीं जान सकता।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

ज्यों प्रत्यक्ष वृद्धि उच्छवासों, का दृग ज्योति के भाजन।
निजस्वरूप के अनुभव की जो, शक्ति न रखते हैं भविजन।।
सकल विश्व के ज्ञायक वह सब, ज्ञानमयी गुण के सागर।
लोकाध्यक्ष आपको कैसे, समझ पाएँगे हे जिनवर !।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।22।।

अर्घ्य- ॐ ह्रीं अर्हं सकलपदार्थज्ञायकभगवत्स्वरूपाज्ञानिस्वात्मानुभव-मूढ़जनप्रतिबोधकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि- ॐ ह्रीँ अर्हं णमो आगासगामीणं।

मंत्र-ॐ ह्राँ ह्रीँ हुँ हूँ हैं हः अनिलोय शम कुरु कुरु स्वाहा।

सर्व भय निवारक

तस्यात्मजस्तस्य पितेति देव ! त्वां येऽवगायन्ति कुलं प्रकाश्य।
तेऽद्यापि नन्वाश्मनमित्यवश्यं, पाणौ कृतं हेम पुनस्त्यजन्ति।।23।।

अर्थ-आप नाभिराज के पुत्र हैं और भरत चक्रवर्ती के पिता हैं। जिस प्रकार कोई सोने और पत्थर में भेद नहीं समझता है, उसी प्रकार पिता पुत्र संबंध से आप ईश्वर नहीं है, किन्तु अनन्त ज्ञानादि गुणों से ही आप परमेश्वर अवस्था को प्राप्त हैं, इस प्रकार जिसको ज्ञान नहीं हुआ, वे आपकी शरण पाकर भी बहिर्दृष्टि ही समझना चाहिए।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

नाभिराय नन्दन हे जिनवर !, पिता भरत के आप महान्।
नाथ ! आपकी वंशावलि कह, अपमानित करते इन्सान।।
स्वर्ण प्राप्त करके हाथों में, पत्थर जन्म समझते हैं।
फिर अवश्य ही जग के, प्राणी पत्थर कहकर तजते हैं।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।23।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं नाभिराज–भरतसम्राट्जनकादिकुलप्रकाशाद्यनपेक्षिणे स्वयंमनन्तगुणादिस्वरूपमाहात्म्यप्राप्ताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो आसीविसाणं।

मंत्र–ॐ नमो श्रां श्रीं क्रौं क्ष्वीं ह्रीँ फट् स्वाहा।

मोह सुभट विजेता

दत्तस्त्रिलोक्यां पटहोऽभिभूताः, सुराऽसुरास्तस्य महान् स लाभः।
मोहस्य मोहस्त्वयि को विरोद्धुर्, मूलस्य नाशो बलवद्विरोधः।।24।।

अर्थ–मोह के द्वारा तीनों लोकों में विजय का नगाड़ा बजाया गया उससे सुर–असुर तिरस्कृत हुए, उस मोह को बड़ा लाभ हुआ किन्तु आपके विषय में मोह को भी मूर्छा प्राप्त हो गई सो ठीक है बलवान के साथ विरोध करना विरोध करने वाले के मूल का नाश करना है।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

तीन लोक में मोह सुभट ने, जय का पटह बजाया है।
हुए तिरस्कृत उससे सब पर, लाभ मोह ने पाया है।
उसको भी तो आपके सम्मुख, पड़ा पराजित होना देव।
सत्य सबल का रिपु रहा जो, नाश हुआ वह पूर्ण सदैव।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।24।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनस्थितसुरासुरमनुष्यादिविजयिमोहराज–प्रभावमूलोन्मूलिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो दिट्ठि विसाणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ नमो नमः सर्व सूरिभ्यः उपाध्यायेभ्यः ॐ नमः स्वाहा।

दोहा– भक्ती के शुभ भाव से, मिलता ज्ञान प्रकाश।
विशद ज्ञान पाके 'विशद', पावे शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं विषापहारिणे श्री ऋषभ देवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र रोगनाशक

मार्गस्त्वयैको ददृशे विमुक्ते–श्चतुर्गतीनां गहनं परेण।
सर्वं मया दृष्टमिति स्मयेन, त्वं मा कदाचिद्–भुजमालुलोकः।।25।।

अर्थ–आपके द्वारा एक मोक्ष का ही मार्ग देखा गया है और दूसरे के द्वारा चारों गतियों का सघन वन देखा गया है इसलिए आपने सब कुछ देखा है इस अभिमान से कभी भी अपनी भुजा को नहीं देखा।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

जो भी देखा नाथ आपने, मोक्षमार्ग पर रहा गमन।
औरों ने जो भी देखा वह, चतुर्गति का रहा भ्रमण।।

सर्व चराचर मैंने देखा, ऐसा कभी नहीं कहकर।
स्वयं भुजाएँ अपने मद से, देखी नहीं कभी जिनवर।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।25।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्गतिगहनमार्गदर्शीश्वरापेक्षया केवलैकमोक्षमार्गदर्शिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्ग तवाणं।

मंत्र–ॐ थम्मेई थम्मेई जल जलण घोरूवसग्गं पणासेउ स्वाहा।

सर्व संकट निवारक

स्वर्भानुरर्कय हविर्भुजोऽम्भः, कल्पान्तवातोऽम्बुनिधेर्विघातः।
संसारभोगस्य वियोगभावो, विपक्षपूर्वाभ्युदयास्त्वदन्ये।।26।।

अर्थ–हे प्रभु ! राहु सूर्य का, पानी अग्नि का प्रलयकाल की वायु समुद्र का विरह भाव संसार के भोगों का नाश करने वाला है। इस तरह आप से भिन्न सब पदार्थ विनाश के साथ ही उदय होते हैं।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
राहु सूर्य का ग्राहक है तो, जल पावक का संहारक।
जो कल्पान्त काल का भीषण, मारुत सागर का नाशक।।
विरह भाव इस जग के भोगों, का क्षयकारी रहा विशेष।
सिवा आपके सबका अरि संग, होता है संयोग जिनेश।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।26।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यविरोधिराहु–अग्निविरोधिजल–संसारभोगविरोधि–वियोगभावप्रतिपादनकुशलाय स्वयं विपक्षगणरहिताय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं।

मंत्र–ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं धणुं धणुं महाधणुं महाधणुं स्वाहा।

वैभव प्रदायक

अजानतस्त्वां नमतः फलं यत्, –तज्जानतोऽन्यं न तु देवतेति।
हरिन्मणिं काचधिया दधानस्–, तं तस्य बुद्ध्या वहतो न रिक्तः।।27।।

अर्थ–हे प्रभु ! आपको बिना जाने ही नमस्कार करने वाले पुरुष को जो फल प्राप्त होता है दूसरे देवता है, इस तरह जानने वाले पुरुष को नहीं होता क्योंकि जिस तरह अन्जान मनुष्य हरित मणि को पहिनकर उसे काँच समझता है तो वह दूसरे की निगाह में जो मणि को मणि समझकर पहन रहा है, निर्धन नहीं कहलाता है, वे दोनों एक जैसी सम्पत्ति के अधिकारी कहे जाते हैं। श्रद्धा और विवेक के साथ प्राप्त हुआ भी अल्प ज्ञान प्रशंसनीय है।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।
बिना आपको जाने जिनवर ! विजयी फल पाता जैसा।
देव समझ करके औरों को, कभी न फल पावे वैसा।।
निर्मल मणि को काँच समझकर, धारण जो करता सज्जन।
मणि को मणी समझने वाला, होता नहीं कभी निर्धन।।
आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।27।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं त्वद्गुणज्ञानविरहितनमस्कृतिमात्रेणापि ईप्सितफलप्रापक समर्थाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्तवाणं।

मंत्र–ॐ नमो भगवते श्रीमते जय–विजय विमोहय–विमोहय सर्व सिद्धि सौख्यं कुरु–कुरु स्वाहा।

पिशाचादि बाधा निवारक

प्रशस्तवाचश्चतुराः कषायैर्–, दग्धस्य देव व्यवहारमाहुः।
गतस्य दीपस्य हि नन्दितत्त्वं, दृष्टं कपालस्य च मंगलत्वम्।।28।।

अर्थ–सुन्दर वचन बोलने वाले चतुर मनुष्य कषायों से संतप्त हुए पुरुष के भी देव शब्द का व्यवहार करना चाहते हैं। सो ठीक ही है, क्योंकि बुझे हुए दीपक का बढ़ना और फूटे हुए घड़े का मंगलपन देखा गया है।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

ज्यों व्यवहार कुशल पटु वक्ता, चतु:कषायों से दहते।
रागी द्वेषी मोही जन को, देव निरन्तर जो कहते।।
बुझे हुए दीपक को प्राणी, जैसे कहते दीप बड़ा।
कहते हैं कल्याण हुआ जब, फूट जाय यदि कोई घड़ा।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।28।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं कषायदग्धजनानां देवशब्दसंबोधनप्रशस्तवाक्यकुशल–जनसत्यमार्गप्रतिबोधकाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो महातवाणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ श्रीं क्लीं अ सि आ उ सा चुलु–चुलु हुलु–हुलु मुलु–मुलु कुलु–कुलु इच्छियं में कुरु–कुरु स्वाहा।

ज्वर पीड़ा विनाशक

नानार्थ मेकार्थमदस्त्वदुक्तं, हितं वचस्ते निशमय्य वक्तुः।
निर्दोषतां के न विभावयन्ति, ज्वरेण मुक्तः सुगमः स्वरेण।।29।।

अर्थ–अनेक अर्थों के प्रतिपादक तथा एक ही प्रयोजन युक्त आपके कहे हुए इन हितकारी वचनों को सुनकर कौन मनुष्य आप जैसे वक्ता की निर्दोषता को नहीं अनुभव करते हैं अर्थात् सभी करते हैं। जैसे जो ज्वर से मुक्त हो जाता है वह स्वर से सुगम हो जाता है। अर्थात् सब स्वरों का अच्छी तरह उच्चारण कर सकता है।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

हैं एकार्थ आपके वर्णित, कई अर्थों के प्रतिपादक।
त्रिभुवन हितकारी वचनों के, कौन लोक में हैं धारक।।
निर्दोषत्व न तत्क्षण अपना, प्रभुवर अनुभव को पाता।
सच है ज्वर से विरहित योगी, स्वर सुगम्य कहा जाता।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।29।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं परस्परविरोधविरहितसर्वहितकरस्याद्वादवचनोपदेशिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो घोरतवाणं।

मंत्र–ॐ नमो ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रँः क्ष्वीं सर्वरोग निवारणं सर्वदोष हारणं कुरु–कुरु स्वाहा।

भव सिन्धु तारक

न क्वापि वाञ्छाववृते च वाक्ते, काले क्वचित्कोऽपि तथा नियोगः।
न पूरयाम्यम्बुधिमित्युदंशुः, स्वयं हि शीतद्युतिरभ्युदेति।।30।।

अर्थ–जिस प्रकार चन्द्रमा यह इच्छा रखकर उदित नहीं होता कि जिस समुद्र को लहरों से भर दूँ पर उसका वैसा स्वभाव है कि चन्द्रमा का उदय होने पर समुद्र में लहरें उठने लगती हैं, इसी प्रकार आपकी यह इच्छा नहीं है कि मैं कुछ बोलूँ पर वैसा स्वभाव होने से आपके वचन प्रकट होने लगते हैं।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

इच्छा नहीं आपकी कुछ भी, खिरते वचन स्वयं पावन।
किसी काल में वैसा होता, नियम नहीं न अपनापन।।
उगता नहीं सोच ज्यों शशि यह, करूँ सिन्धु को मैं पूरित।
पर स्वभावत: प्रतिदिन रजनी, दूर करे होकर समुदित।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।30।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं स्वयमुदितपूर्णचंद्राम्बुधिपूरमिव इच्छाविरहितसर्वजनहित–करदिव्यध्वनिप्रकटितकरणाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं परक्कमाणं, गुण बंभयारीणं।

मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्ष्वीं अरिहंत सिद्ध आइरिय उवज्झाय सव्व साहूणं।

श्रेष्ठ गुण प्रदायक

गुणा गभीराः परमाः प्रसन्नाः, बहुप्रकारा बहवस्तवेति।
दृष्टोऽयमन्तः स्तवने न तेषाम्, गुणो गुणानां किमतः परोऽस्ति।।31।।

अर्थ–आपके गुण गंभीर उत्कृष्ट उज्ज्वल अनेक प्रकार और बहुत हैं इस प्रकार ही उनका अन्त देखा जाता है अर्थात् वे गुण आपको छोड़कर अन्य किसी में नहीं पाए जाते स्तुति में उनका अन्त नहीं जाता क्योंकि आपमें अनन्त गुण है इससे बढ़कर अन्य क्या गुण है ? अर्थात् कुछ नहीं।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

गुण गण हैं हे नाथ ! आपके, अनुपम अगणित अरु गम्भीर।
और अपरिमित श्रेष्ठ समुज्ज्वल, विविध भांति उत्कृष्ट सुधीर।।
यों तो अन्त दिखाता उनका, नहीं स्तवन में जिनवर।
और अन्य गुण क्या हो सकते, हे जिनेन्द्र ! इनसे बढ़कर।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।31।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं गंभीर–परम–प्रसन्न–बहुप्रकार–बहु–अन्तविरहित–अनन्तगुणस्वामिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं।

मंत्र–ॐ ह्रीं क्लीं क्ष्वीं ऐं ह्यौं पदमावत्यै श्रीं स्वाहा।

इष्ट फलसाधक

स्तुत्या परं नाभिमतं हि भक्त्या, स्मृत्या प्रणत्या च ततो भजामि।
स्मरामि देवं प्रणमामि नित्यं, केनाप्युपायेन फलं हि साध्यम्।।32।।

अर्थ–हे भगवान ! आपकी स्तुति से, भक्ति से, स्मृति, ध्यान और प्रणति से जीवों को इच्छित फलों की प्राप्ति होती है इसलिए मैं प्रतिदिन आपकी स्तुति करता हूँ, भक्ति करता हूँ, ध्यान करता हूँ और नमस्कार करता हूँ, क्योंकि किसी भी उपाय से इष्ट वस्तु प्राप्त करना यह मनुष्य मात्र का कर्त्तव्य है।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

केवल संस्तुति करने से ही, मन वाच्छित न होवे सिद्ध।
सद्भक्ति और नमस्कृति से, संस्मृति से होय प्रसिद्ध।।
प्रतिपल नत होकर ध्याता जो, भजे आपको भी अत एव।
परम साध्य फल पा लेता है, कारण किसी विधि से एव।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।32।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं स्तुति–भक्ति–स्मृति–प्रणति इत्यादि उपायैः अभिमतफलप्राप्त्यर्थं प्रयत्नतत्परभक्तिकजनमनोरथपूर्णीकराय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ श्रीं अ सि आ उ सा सर्व परिदुष्टान स्तम्भय स्तम्भय मोहय मोहय अंधय–अंधय मूकवत्वारय कुरु–कुरु ह्रीँ स्वाहा।

अखण्ड स्वामित्व दायक

ततस्त्रिलोकी नगराधिदेवं, नित्यं परं ज्योतिरनंतशक्तिम्।
अपुण्यपापं परपुण्यहेतुं, नमाम्यहं वन्द्यमवन्दितारम्।।33।।

अर्थ–हे भगवान ! आप तीन लोक के स्वामी हैं, आपका कभी विनाश नहीं होता, सर्वोत्कृष्ट हैं, केवलज्ञानरूप ज्योति से प्रकाशमान हैं, आप में अनन्तबल है, आप स्वयं पुण्य–पाप से रहित हैं, पर अपने भक्त जनों के पुण्य बन्ध में निमित्त कारण हैं, आप किसी को नमस्कार नहीं करते पर सब लोग आपको नमस्कार करते हैं। आपकी इस विचित्रता से मुग्ध होकर मैं भी आपके लिये नमस्कार करता हूँ।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

प्रभु अतएव त्रिलोक स्वरूपी, इस नगरी के अधिकारी।
शाश्वत हैं अति श्रेष्ठ प्रभामय, प्रभु निस्सीम शक्ति धारी।।
पुण्य पाप से विरहित हैं जो, पुण्य हेतु जग में वन्दित।
स्वयं अखण्ड प्रभु को करता, मैं प्रणाम हो आनन्दित।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।33।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं नित्य–परंज्योति–रनन्तशक्तिस्वरूपत्रैलोक्याधिपतये पुण्य–पापविरहितपरपुण्यहेतवे सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ श्रीं क्लीं इयं वृश्चिक विषापहारिणी विद्या हूँ नमः स्वाहा।

सर्व सिद्धिदायक

अशब्दमस्पर्शमरूपगन्धं, त्वां नीरसं तद्विषयावबोधम्।
सर्वस्य मातारममेय–मन्यै–, र्जिनेन्द्र–मस्मार्यमनुस्मरामि।।34।।

अर्थ–हे भगवान ! आप रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द रहित हैं, अमूर्तिक हैं, फिर भी उन्हें जानते हैं। आप सबको जानते हैं पर आपको कोई नहीं जान पाता। यद्यपि आपका मन से भी कोई स्मरण नहीं कर सकता तथापि मैं अपने बाल साहस से आपका क्षण–क्षण में स्मरण करता हूँ।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

जो स्पर्श हीन अति नीरस, गंध रूप से पूर्ण विहीन।
और शब्द से रहित जिनोत्तम, तद्विषयक हैं ज्ञान प्रवीण।।
प्रभु सर्वज्ञ स्वयं होकर भी, अन्य जनों से जो वंदित।
ध्याते हम अस्मार्य जिनेश्वर, विशद भाव से हो प्रमुदित।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।34।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं शब्द गंध–स्पर्श–रूप–रसविरहिताय अन्यैरज्ञेयाय सर्वज्ञजिनेन्द्राय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं।

मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं बाहुबलि महाबाहुबलि प्रचण्ड बाहुबलि पराक्रमी बाहुबलि ऊर्ध्व बाहुबलि शुभाशुभं कथयते कथयते स्वाहा।

सर्व विपत्ति नाशक

अगाधमन्यैर्मनसाप्यलंघयं, निष्किञ्चनं प्रार्थितमर्थवद्भिः।
विश्वस्य पारं तमदृष्टपारं, पतिं जनानां शरणं व्रजामि।।35।।

अर्थ–हे भगवान ! आप बहुत ही गम्भीर–धैर्यवान् हैं। आपका कोई मन से भी चिन्तवन नहीं कर सकता। यद्यपि आपके पास देने के लिए कुछ भी नहीं है, तो भी धनिक लोग अथवा याचक वर्ग आपसे याचना करते हैं, आप सबके पार को जानते हैं, पर आपके पार को कोई नहीं जान सकता और आप जगत के जीवों के पति (रक्षक) हैं। ऐसा सोचकर मैं भी आपकी शरण में आया हूँ।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

जो गम्भीर सिन्धु से बढ़कर, मन द्वारा भी अनुलंघित।
निष्किन्चन होने पर भी जो, धनवानों द्वारा याचित।।
जो हैं सबके पार स्वरूपी, पर जिनका न पाए पार।
शरण प्राप्त हो जाए उनकी, जगत्पति जो अपरम्पार।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।35।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं अर्थिभिः प्रार्थ्यनिकिंचनाय अदृष्टपारविश्वपारंगताय जिनपतये सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं।

मंत्र–ॐ ह्रीं वृषभ यक्ष दिव्य रूपाय मघ वर्ण एहि एहि श्रीं आं क्रों ह्रीं नमः स्वाहा।

स्वभाविक गुण प्रदायक

त्रैलोक्यदीक्षागुरवे नमस्ते, यो वर्धमानोऽपि निजोन्नतोऽभूत्।
प्राग्गण्डशैलः पुनरद्रिकल्पः, पश्चान्न मेरुः कुलपर्वतोऽभूत्।।36।।

अर्थ–त्रिभुवन के जीवों के दीक्षागुरु स्वरूप आप के लिए नमस्कार हो जो आप क्रम से उन्नति को प्राप्त होते हुए भी अंतिम तीर्थंकर स्वयमेव उन्नत हुए थे। मेरु पर्वत पहले गोल पत्थरों का ढेर, फिर पहाड़ और फिर कुलाचल नहीं हुआ था किन्तु स्वभाव से ही वैसा था।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

त्रिभुवन के दीक्षा गुरुवर हे ! नमन् आपको शत्–शत् बार।
वर्धमान होकर भी उन्नत, स्वयं आप हो अपरम्पार।।
मेरु गिरि के पूर्व में टीला, शिला राशि फिर पर्वत राज।
क्रमशः कुल गिरि हुआ न फिर भी, था स्वभाव से उन्नत ताज।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।36।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं मेरुपर्वतमिव स्वयमेव त्रैलोक्यदीक्षागुरवे सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो मणबलीणं, वचबलीणं, कायबलीणं, खीर सवीणं सप्पिसवीणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ श्रीं क्षीं क्षीं ऐं श्रीं चामुण्डे स्वाहा।

परमात्मा फलदायक

स्वयंप्रकाशस्य दिवा निशा वा–, न बाध्यता यस्य न बाधकत्वम्।
न लाघवं गौरवमेकरूपं, वन्दे विभुं कालकलामतीतम्।।37।।

अर्थ–स्वयं प्रकाशमान रहने वाले जिसके दिन और रात की तरह न बाध्यता है और न बाधकपना भी। इसी प्रकार जिनके न लाघव है न गौरव भी, उन एकरूप रहने वाले और काल की कला से रहित अर्थात् अन्तरहित परमेश्वर को वन्दना करता हूँ।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

जो स्वयमेव प्रकाशित जिसको, दिन अरु रात का भेद नहीं।
न बाधकता अरु बाधत्व का, न ही होता नियम कहीं।।
यों जिनके न कभी भी लाघव, और न गौरव है अणुभर।
अविनाशी उन एक रूप जिन, को प्रणाम मेरा सादर।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।37।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रकाशरूप–लाघवगौरवविरहितैकरूपाय कालकलामतीताय विभवे सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो महुरसवीणं।

मंत्र–ॐ नमो ज्वालामालिनी जिनशासन सेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रव विनाशिनी शान्तिकारिणी धर्म प्रकाशिन कुरु–कुरु स्वाहा।

इच्छित फलदायक

इति स्तुतिं देव विधाय दैन्याद्–वरं न याचे त्वमुपेक्षकोऽसि।
छाया तरुं संश्रयतः स्वतः स्यात्–कश्छायया याचितयात्मलाभः।।38।।

अर्थ–हे देव ! इस प्रकार स्तुति करके मैं दीन भाव से वरदान नहीं माँगता, क्योंकि आप उपेक्षक हैं, रागद्वेष से रहित हैं अथवा वृक्ष का आश्रय करने वाले पुरुष को छाया स्वयं प्राप्त हो जाती है छाया याचना से क्या लाभ ?

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

हे प्रभुवर ! यों संस्तुति करके, मैं भी दीन भाव के साथ।
नहीं माँगता हूँ वर कोई, क्योंकि आप उपेक्षक नाथ ।।
वृक्षाश्रित को स्वयं आप ही, मिल जाती छाया शीतल।
भीख माँगने से छाया की, मिलता है क्या कोई फल।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।38।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतिकर्त्रे याचनाविरहितायापि सर्वाभीप्सितफलप्रदायिने सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीँ अर्हं णमो अमिय सवीणं।

मंत्र–ॐ ह्रीँ श्रीं क्ष्वीं धीं धीं हं सः ह्रौँ ह्रः ह्राँ द्रौं द्रः सर्व जनवश्यं महामोहनि कुरु–कुरु स्वाहा।

विषम ज्वर विनाशक

अथास्ति दित्सा यदि वोपरोध–स्त्वय्येव सक्तां दिश भक्तिबुद्धिम्।
करिष्यते देव तथा कृपां मे–, को वात्मपोष्ये सुमुखो न सूरिः ।।39।।

अर्थ–यद्यपि मुझे आपकी भक्ति से किसी प्रकार के फल की अभिलाषा नहीं है। फिर भी आपके अनुग्रह से यदि उसका फल होता है तो केवल आप में सर्वकालिक और अन्य भक्ति ही मैं उसका फल चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त मुझे दूसरी किसी वस्तु की अभिलाषा नहीं है। अथवा इतना ही क्यों, मेरे द्वारा की गई भक्ति वह भक्ति मुझे इतना फल अवश्य देगी।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

यदि आग्रह कुछ देने का है, या देने की अभिलाषा।
हो जाऊँ भक्ति में तत्पर, यही मात्र मेरी आशा।।
है विश्वास आप अब वैसी, कृपा करोगे हे जिनवर !।
निज शिष्यों पर करुणाकर क्या ?, होते नहीं श्री गुरुवर।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।39।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं त्वय्येव भक्तिबुद्धियाचनासफलीकराय आत्मपौष्य–शिष्याचार्याय परमकृपालवे सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं बड्ढमाणाणं।

मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रां श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रौं क्ष्वीं कुविष विषमविष महाविष निवारिण्यै महामायायै स्वाहा।

धन, जय, सुख, यश प्रदात्ती जिनभक्ति

वितरति विहिता यथाकथञ्चिज्, जिन विनताय मनीषितानि भक्तिः।
त्वयि नुतिविषया पुनर्विशेषाद्–, दिशति सुखानि यशो 'धनंजयं' च।।40।।

अर्थ–हे जिनेन्द्र ! जिस किसी तरह की गई भक्ति नम्र मनुष्य के लिए इच्छित वस्तुएँ देती हैं फिर आपके विषय में की गई स्तुति विषयक भक्ति विशेष रूप से सुख, कीर्ति, धन और जीत को देती है इसलिए आपकी भक्ति हमें शरणभूत हो।

श्री जिनेन्द्र हितकारी हैं, जग में मंगलकारी हैं।
उनका हम गुणगान करें, चरणों विशद प्रणाम करें।।

जिस किस भाँति से सम्पादित, देव वंद्य हे जिननायक !
मन वाच्छित फल देने वाली, भक्ति कर्मों की क्षायक।।
संस्तुति विषयक भक्ति आपकी, देती है शुभ फल निश्चय।
'विशद' ओज विद्यादायक है, कीर्ति धनंजय ही अक्षय।।

आदिनाथ जिन स्वामी की, जय हो अन्तर्यामी की।
उनके हम गुण गाते हैं, सादर शीश झुकाते हैं।।40।।

अर्घ्य– ॐ ह्रीं अर्हं त्वत्पदकमलभक्तिकाय मे सर्वसौख्यं यशो धनं जयं दातुं समर्थाय सर्वविषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि– ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व साहूणं।

मंत्र–ॐ नमो भगवते विषय विषविनाशिनी महाकालदुष्ट मृतक कोस्थापनी पाप विमोचनी जगदुद्धारिणी देवी देवते ह्रीं स्वाहा।

न्याय और व्याकरण के ज्ञाता, कविगण एवं संत सहाय।
वादिराज अरु कवि धनञ्जय, की तुलना में हैं निरुपाय।।
पाकर शुभ आशीष गुरु का, किया पद्यमय यह अनुवाद।
'विशद' ज्ञान के सुधा कलश से, पाने को अनुपम आस्वाद।।41।।

ॐ ह्रीं विषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभनाथ देवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं अर्हं विषापहारिणे आदितीर्थंकर श्री ऋषभनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- भक्ती के वश हम हुए, आज यहाँ वाचाल।
विषापहार स्तोत्र की गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

धनुषाकार लोक बतलाया, आगम में भाई।
ढाई द्वीप के मध्य लोक में, महिमा शुभ गाई।।
श्रेष्ठ है जिनकी प्रभुताई।
पाँच भरत, ऐरावत जिसमें, अरु विदेह भाई-श्रेष्ठ।।1।।

भव्य जीव तीर्थंकर बनते, विशद ज्ञान पाई।
महिमा का ना पार है जिनकी, ग्रन्थों में गाई।।
श्रेष्ठ है जिनकी प्रभुताई।
पाँच भरत, ऐरावत जिसमें, अरु विदेह भाई-श्रेष्ठ।।2।।

शत इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, होते हैं भाई।
जिनकी पूजा पुण्य प्रदायक, अनुपम सुखदायी।।
श्रेष्ठ है जिनकी प्रभुताई।
पाँच भरत, ऐरावत जिसमें, अरु विदेह भाई-श्रेष्ठ।।3।।

कवि धनञ्जय श्री जिनेन्द्र का, भक्त हुआ भाई।
करता था जो पूजा प्रतिदिन, हरदम हर्षाई।।
श्रेष्ठ है जिनकी प्रभुताई।
पाँच भरत, ऐरावत जिसमें, अरु विदेह भाई-श्रेष्ठ।।4।।

काटा सर्प ने सेठ पुत्र को, एक समय भाई।
सेठ को लेने मंदिरजी में, सेठानी आई।।
श्रेष्ठ है जिनकी प्रभुताई।
पाँच भरत, ऐरावत जिसमें, अरु विदेह भाई-श्रेष्ठ।।5।।

पुत्र हुआ बेहोश साथ में, सेठानी लाई।
पूजा में तल्लीन सेठ ने, सुना नहीं भाई।।
श्रेष्ठ है जिनकी प्रभुताई।
पाँच भरत, ऐरावत जिसमें, अरु विदेह भाई-श्रेष्ठ।।6।।

मृतक जानकर पुत्र सेठानी, मन में घबराई।
जोर-जोर से सेठानी तब, रोई चिल्लाई।।
श्रेष्ठ है जिनकी प्रभुताई।
पाँच भरत, ऐरावत जिसमें, अरु विदेह भाई-श्रेष्ठ।।7।।

पूजा करके सेठ ने प्रभु से, विनती की भाई।
जैनधर्म की महिमा प्रभुवर, दिखलाओ भाई।।
श्रेष्ठ है जिनकी प्रभुताई।
पाँच भरत, ऐरावत जिसमें, अरु विदेह भाई-श्रेष्ठ।।8।।

गंधोदक छिड़का बालक पर, जिन प्रभु को ध्यायी।
विषापहार स्तोत्र के द्वारा, जिन भक्ति गाई।।
श्रेष्ठ है जिनकी प्रभुताई।
पाँच भरत, ऐरावत जिसमें, अरु विदेह भाई-श्रेष्ठ।।9।।

श्री जिनेन्द्र ने जैनधर्म की, महिमा दिखलाई।
जय-जयकार किया लोगों ने, उसी समय भाई।।
श्रेष्ठ है जिनकी प्रभुताई।
पाँच भरत, ऐरावत जिसमें, अरु विदेह भाई-श्रेष्ठ।।10।।

'विशद' भाव से गुण गाते हम, चरणों सिरनाई।
कर्मों का हो शीघ्र नाश अब, मुक्ति हो भाई।।
श्रेष्ठ है जिनकी प्रभुताई।
पाँच भरत, ऐरावत जिसमें, अरु विदेह भाई-श्रेष्ठ।।11।।

ॐ ह्रीं श्री विषापहारस्तोत्र वर्णित समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– सेठ 'धनञ्जय' ने लिखा, विषापहार स्तोत्र।
दुःखहारी सब सौख्यकर, दिया भक्ति का स्रोत।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

आदिनाथ भगवान की आरती

करहुँ आरती आज जिनेश्वर तुमरे।
तुमरे द्वारे स्वामी, तुमरे द्वारे, आदीश्वर महाराज। जिनेश्वर....

मानतुंग ने तुमको ध्याया, भक्तामर स्तोत्र रचाया।
बेडी टूटी ताले टूटे, बन्धन से मुनिवर जी छूटे।।
हुआ बड़ा चमत्कार–जिनेश्वर.... ।।1 ।।

जिन की भक्ती करने वाले, कवि धनञ्जय हुए निराले।
डसा नाग ने सुत को भाई, पत्नि तब मन में घबड़ाई।।
गई प्रभु के द्वार–जिनेश्वर.... ।।2 ।।

सेठ ने गंधोदक छिड़काया, जहर सर्प का पूर्ण नशाया।
चमत्कार अतिशय दिखलाया, लोगों ने जयकार लगाया।।
हरसे तब नर–नार–जिनेश्वर.... ।।3 ।।

विषापहार स्तोत्र बनाया, भक्ती से प्रभु पद में गाया।
महिमाशाली जो बतलाया, पढ़ने वाले ने फल पाया।।
जग में अपरम्पार–जिनेश्वर.... ।।4 ।।

आरति करने को हम आये, दीप जलाकर के शुभ लाए।
'विशद' भावना मन में भाए, शिवपद हमको भी मिल जाए।।
वंदन बारम्बार–जिनेश्वर.... ।।5 ।।

प्रशस्ति

दोहा

भरत क्षेत्र में देश है, भारत जिसका नाम।
हरियाणा शुभ प्रांत है, ऋषि मुनियों का धाम।।1 ।।
रेवाड़ी इक जिला है, जैनों का स्थान।
तीर्थ तिजारा के निकट, होता शोभावान।।2 ।।
पर्व अढ़ाई के समय, कीन्हा यहाँ प्रवास।
जैनपुरी के मध्य में, जैन भवन में खास।।3 ।।
रचना पूर्ण विधान की, हुई यहाँ पर आन।
विषापहार स्तोत्र का, किया गया गुणगान।।4 ।।
दो हजार ग्यारह शुभम्, वर्षायोग के पूर्व।
कार्य हुआ यह श्रेष्ठ शुभ, अतिशय कार्य अपूर्व।।5 ।।
वीर निर्वाण पच्चीस सौ, सैंतीस रहा महान।
चौदस शुक्ला असाढ़ की, गुरुवार दिन मान।।6 ।।
समय लगे शुभ योग में, लेखन कीन्हा कार्य।
पूजन भक्ती का शुभम, लाभ लेय सब आर्य।।7 ।।
लघु धी से जो भी लिखा, जानो उसे प्रमान।
भूल–चूक को भूलकर, करो धर्म का ध्यान।।8 ।।
अन्तिम यह है भावना, जीवन बने महान।
सुख शांति सौभाग्य पा, हो सबका कल्याण।।9 ।।
आदिनाथ भगवान का, किया गया गुणगान।
गुण पाने के भाव से रचना हुई महान।।10 ।।
भाव रहें मेरे शुभम्, यही भावना नाथ।
तीन योग से तव चरण, झुका रहे हम माथ।।11 ।।

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंॐ
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वनन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंॐ

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंॐ

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाॐ

विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेङ्क

आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाङ्क
in vkpk;Z izfr'Bk dk 'kqHk] nks gtkj lu~ ik;p jgkA
rsjg Qjojh calr iapeh] cus xq# vkpk;Z vgkAA
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रूँ 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ब्र. आस्था दीदी

New
10-4-2012

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे ।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या है ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद
17. संस्कार विज्ञान
18. विशद स्तोत्र संग्रह
19. भगवती आराधना, संकलित
20. जरा सोचो तो !
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
23. जीवन की मन: स्थितियाँ
24. आराध्य अर्चना, संकलित
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद प्रवचन पर्व
29. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
30. श्री विशद नवदेवता विधान
31. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
32. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
33. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
34. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
35. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
36. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
37. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
38. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान
39. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
40. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
41. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्मेदशिखर विधान
42. श्री श्रुत स्कंध विधान
43. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
44. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
45. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
46. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
47. श्री याग मण्डल विधान
48. श्री जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
49. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
50. विशद पञ्च विधान संग्रह
51. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
52. विशद सुमतिनाथ विधान
53. विशद संभवनाथ विधान
54. विशद लघु समवशरण विधान
55. विशद सहस्रनाम विधान
56. विशद नंदीश्वर विधान
57. विशद महामृत्युञ्जय विधान
58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान
59. लघु पञ्चमेरु विधान एवं नंदीश्वर विधान
60. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
61. श्री दशलक्षण धर्म विधान
62. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
63. श्री सिद्धचक्र विधान
64. विशद अभिनव कल्पतरू विधान
65. विशद श्रेयांसनाथ विधान
66. विशद जिनगुण संपत्ति विधान
67. विशद अजितनाथ विधान
68. विशद एकीभाव स्तोत्र विधान
69. विशद ऋषिमण्डल विधान
70. विशद अरहनाथ विधान
71. विशद विषापहार स्तोत्र विधान
72. विशद सुपार्श्वनाथ विधान